दौसा जिले में बालश्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

*नीतू गुप्ता

शोध सारांश

बाल श्रम विश्व में एक ऐसी समस्या है जिसके निदान के बगैर बेहतर भविष्य की कल्पना सम्भव नहीं है। यह स्वयं में एक राष्ट्रीय और सामाजिक कलंक तो है ही, अन्य समस्याओं की जननी भी है। देखा जाए तो यह नौनिहालों के साथ जबरन होने वाला ऐसा व्यवहार है जिससे राष्ट्रीययया समाज का भविष्य खतरे में पड़ता है। यह एक संवेदनषील मुद्दा है, जो लगभग सौ वर्षों से चिन्तन और चिंता के केन्द्र में है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे लेकर वर्ष 1924 में पहल तब हुई, जब जिनेवा घोषणापत्र में बच्चों के अधिकारों को मान्यता देते हुए पांच सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की गई। इसके चलते बाल श्रम को प्रतिबंधित किया गया, साथ ही बच्चों के लिए कुछ विाष्ष्ट अधिकारों की स्वीकृति दी गई।

मुख्य शब्द – बालश्रम, जिनेवा घोषणा पत्र, मौलिक अधिकारपांच सूत्री कार्यक्रम

भारत में बाल–श्रम समस्या एक चुनौती बन गई है। देश में कामकाजी बच्चों की वास्तविक संख्या बहुत ज्यादा है। जातिवाद, गरीबी, परिवार का आकार, तथा आय, शिक्षा का स्तर आदि बाल–श्रमिक को गम्भीर समस्या के रूप में प्रकट करने के लिए उत्तरदायी है। बाल श्रम समस्या एक गहन सामाजिक–आर्थिक समस्या हैयह एक ऐसी बुराई है जिसके लिए समाज के सभी वर्गों में जागरूकता लाने के साथ–साथ सोच का नजरिया भी बदलने की जरुरत है।

इस शोध अध्ययन में राजस्थान के दौसा जिले से कुल 400 बाल मजदूरों को रैंडम रूप चयनित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के बाल श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण, निर्वचन एवं निष्कर्ष को प्रस्तुत करता है।

1 व्यक्तिगत तथ्य

तालिका.1: आयु

आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
5 से 7 वर्ष	29	7.25
8 से 10 वर्ष	85	21.25
11 से 14 वर्ष	286	71.5
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन के अन्तर्गत लिये गये 400 बालश्रमिकों में से सर्वाधिक बालश्रमिक

11 से 14 वर्ष आयु समूह के हैं जो 71.5 प्रतिशत हैं एवं 21.25 प्रतिशत बालश्रमिक 8 से 10 वर्ष आयु के हैं जबकि 5 से 7 वर्ष आयु समूह के 7.25 प्रतिशत बालश्रमिक पाये गये है। तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 11 से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को बालश्रमिकों की श्रेणी में रखा जाता है।

तालिका.2: लिंग

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
बालक	344	86.0
बालिका	56	14.0
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ज्यादातर बालश्रमिक बालक हैं जो संख्या में अधिक हैं जिनका प्रतिशत 86 है, जबकि बालिकाऐं केवल 14 प्रतिशत ही हैं। इस प्रकार अनुपात में बालक बालश्रमिकों की संख्या अधिक पाई गई।

तालिका.3: परिवार का स्वरूप

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
एकाकी परिवार	245	61.25
संयुक्त परिवार	155	38.75
कुल	**400**	**100.0**

प्रस्तुत तालिका में परिवार के स्वरूप के आधार पर बालश्रमिकों का वर्गीकरण किया गया है। 61.25 प्रतिशत बालश्रमिकों के परिवार एकाकी परिवार हैं व 38.75 प्रतिशत बालश्रमिक संयुक्त परिवार में रहते हैं।

तालिका.4: धर्म

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
हिन्दू	298	74.5
मुसलमान	64	16.0
सिख	26	6.5
ईसाई	12	3.0
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक बालश्रमिक हिन्दू धर्म के हैं जो संख्या 400 में से 298 हैं जिनका प्रतिशत 74.5 है। मुसलमान धर्म के बालश्रमिक 16 प्रतिशत एवं सिक्ख धर्म के बालश्रमिक 6.5 प्रतिशत हैं तथा सबसे कम ईसाई धर्म के बालश्रमिक हैं जो संख्या में केवल 12 है जिनका प्रतिशत 3 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समाज में जिस धर्म की बहुलता होगी उसके जीवन के अनुसार बालश्रमिक कार्य में लगे रहेंगे। राज्य के क्षेत्र के अनुसार भारत में बालश्रमिकों में उसी राज्य केक्षेत्र के धर्म की बहुलता होगी।

तालिका. 5: निवास स्थान

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
गांव	60	15.0
शहर	215	53.75
कस्बा	125	31.25
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन किये गये बालश्रमिकों में अधिकांश 53.75 प्रतिशत बालश्रमिक शहरी क्षेत्र से हैं जो जिस शहर में काम करते है वही निवास करते हैं एवं 15 प्रतिशत गांव के रहने वाले जो कमाने के लिए शहर में आये, उनकी संख्या 60 है। दौसा जिले के कस्बे के बालश्रमिक 31.25 प्रतिशत है।

2 सामाजिक स्तर

प्रत्येक व्यक्ति समाज में ही रहता है। समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है। सामाजिक प्राणी होने के नाते उसे समाज में सम्मान, अपनापन, विश्वास आदि प्राप्त होते हैं लेकिन समाज में सबको यह गौरव नहीं मिल पाता। जैसे बालश्रमिक ये भी तो इसी में साँस लेते हैं फिर इनको तिरस्कार, घृणा और षोषण युक्त जीवन क्यों मिलता है। समस्या से सम्बन्धित उत्तरदाताओं की सामाजिक पृष्ठभूमि जानना आवष्यक है।

तालिका. 6: मजदूरी करने का क्या कारण है

	आवृत्ति	प्रतिशत
पारिवारिक दबाव	116	29.0
स्वेच्छा से	68	17.0
जीविकोपार्जन के लिये	181	45.3
अन्य कारण	35	8.8
कुल	**400**	**100.0**

प्रस्तुत तालिका में बाल श्रमिकों द्वारा मजदूरी करने के कारणों का विवेचन किया गया है। तालिका से स्पश्ट होता है कि सर्वाधिक 45.3 प्रतिशत बाल श्रमिक जीविकोपार्जन के लिये मजदूरी करते है जबकि 29 प्रति ात बाल श्रमिक पारिवारिक दबाव के कारण मजदूरी करते है, वहीं 17 प्रतिशत बाल श्रमिक का कहना था कि वे अपनी स्वेच्छा से मजदूरी करते है एवं 8.8 प्रतिशत बाल श्रमिक अन्य कारणों से मजदूरी करते है। अतः हम कह सकते है कि बाल श्रमिकों के श्रम बाजार में प्रवेश करने के कारणों में जीविकोपार्जन ही सबसे अधिक जिम्मेदार तत्व है। अपने जीवन की स्थिति को सुधारने के लियेएवं परिवार के भरण–पोशण ठीक से न होने के कारण वे मजदूरी करने के लिए श्रम बाजार में आते है।

तालिका.7: कौनसा कार्य करते हो

	आवृत्ति	प्रतिशत
दूसरों के घरों में	40	10.0
खेतों में, भट्ठों पर, सड़कों पर	103	25.8
दुकानों, ढ़ाबो व होटल पर आदि	185	46.3
फैक्ट्री, मिल तथा कारखाना	72	18.0
कुल	**400**	**100.0**

प्रस्तुत तालिका में बाल श्रमिकों द्वारा किये गये कार्यो को दर्शाया गया है। उपरोक्त तालिका के अनुसार 10 प्रतिशत बाल श्रमिक दूसरों के घरों में कार्यरत हैं। इसी प्रकार सर्वाधिक 46.3 प्रतिशत बाल श्रमिक दुकानों, ढ़ाबों व रेस्टोरेंटआदि में कार्यरत है। उनके पश्चात् 25.8 प्रतिशत बाल श्रमिक खेतों, भट्ठों एवं सड़कों पर कार्यरत पाये गये हैं।18 प्रतिशत बाल श्रमिक फैक्ट्री, मील व कारखाने में कार्यरत हैं।

तालिका.8: कोई गलती होने पर आपके साथ मालिक का व्यवहार कैसा होता है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
काम से निकाल देना	87	21.8
मारना–पीटना	27	6.8
डॉट गाली	49	12.3
वेतन कटौती	174	43.5
अधिक कार्य	63	15.8
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में बाल श्रमिकों द्वारा कोई गलती होने पर मालिक का व्यवहार कैसा होता है, इस संदर्भ में सर्वाधिक 43.5 प्रतिशत बाल श्रमिक कहते है कि हमारी वेतन में कटौती की जाती है जबकि 21.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों को काम से निकला दिया जाता है, 6.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों को मारा या पीटा जाता है, 12.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों को डाट या गाली पड़ती है एवं 15.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों से कोई गलती होने पर मालिक द्वारा समय से अधिक कार्य करवाया जाता है। तालिका से स्पष्ट होता है कि बाल श्रमिकों द्वारा अगर कोई गलती होती है तो उनके वेतन में कटौती की जाती है। वही अगर देखा जाये तो सभी मद में मालिकों का व्यवहार बाल श्रमिकों के प्रति अच्छा नहीं रहा है। इनमें भाोशण की प्रवृत्ति विद्यमान है।

तालिका.9: आपके किस प्रकार के श्रम से संबंधित हो

	आवृत्ति	प्रतिशत
खतरनाक श्रम	104	26.0
गैर खतरनाक श्रम	296	74.0
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका के अनुसार कार्य का स्वरूप भिन्न–भिन्न दर्षाया गया है। खतरनाक श्रम में सलंग्न बाल श्रमिक 26 प्रतिशत पाये गये हैं और गैर खतरनाक श्रम में संलग्न बाल श्रमिक 74 प्रतिशत पाये गये हैं। तालिका से

स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक बाल श्रमिक गैर खतरनाक श्रम से संबंधित है।

तालिका.10: क्या आपके दण्ड का विरोध करते हो

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	320	80.0
नहीं	80	20.0
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में बाल श्रमिकों से पूछा गया कि क्या आपके द्वारा कोई गलती करने पर मालिक द्वारा दिये गये दण्ड का विरोध किया जाता है तो इनमें से सर्वाधिक 80 प्रतिशत बाल श्रमिक दण्ड का विरोध करते है जबकि 20 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जो दण्ड का विरोध नहीं करते है। तालिका से स्पष्ट होता है बाल श्रमिक मालिकों द्वारा किये जाने वाले गलत व्यवहार तथा दिये जाने वाले दण्ड का विरोध करते है।

तालिका.11: क्या आपसे जबरदस्ती श्रम करवाया जाता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	157	39.3
नहीं	243	60.8
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में कुल 400 बाल श्रमिकों से पूछा गया कि क्या आपसे जबरदस्ती श्रम करवाया जाता है। तो इनमें से सर्वाधिक 60.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों का कहना है कि उनसे जबरदस्ती श्रम नहीं करवाया जाता है। जबकि 39.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों से जबरदस्ती श्रम करवाया जाता है।

तालिका.12: मालिक द्वारा कितने घण्टे काम करवाया जाता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
4 से 6 घण्टे	50	12.5
6 से 8 घण्टे	137	34.3
8 से 10 घण्टे	128	32.0
10 घण्टे से अधिक	85	21.3
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 4–6 घंटे काम करने वाले बालश्रमिक लगभग 12.5 प्रतिशत हैं। 6–8 घंटे काम करने वाले बालश्रमिक 34.3 प्रतिशत, 8–10 घंटे काम करने वाले बालश्रमिक 32 प्रतिशत एवं 10 घंटे से अधिक अवधि काम करने वाले बालश्रमिकों का प्रतिशत 21.3 है। तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक6 से 10 घण्टों तक मालिक द्वारा बाल श्रमिकों से काम करवाया जाता है। तालिका से स्पष्ट होता है कि यहाँ पर सरकार द्वारा निर्धारित मानक के विपरीत बाल श्रमिकों से समय से अधिक कार्य करवाया जा रहा है। साथ ही सरकार द्वारा

बनाये गये नियमों एवं कानूनों का इन प्रतिश्ठानों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। ये व्यवसायी बाल श्रमिकों को इस कार्य के लिए इसलिये रखते है कि उन्हें कम मजदूरी देकर अधिक कार्य करवाया जा सकें क्योंकि ये बाल श्रमिक सरकार द्वारा लागू कानून एवं संविधान के बारे में कुछ भी नहीं जानते।

तालिका.13: मालिक द्वारा किस प्रकार की सुविधायें प्राप्त होती है

	आवृत्ति	प्रतिशत
कपड़े/भोजन	70	17.5
आवास	31	7.8
कपड़े/भोजन व आवास दोनों	88	22.0
कोई सुविधा नही	211	52.8
कुल	**400**	**100.0**

निम्न तालिका बाल श्रमिकों को मालिक द्वारा मिलने वाली सुविधाओं को दर्शाती है। 17.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने माना है कि मालिक द्वारा उनको कपड़े/भोजन की सुविधा दी जाती है, वही 7.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों को आवास की सुविधा एवं 22 प्रतिशत बाल श्रमिकों को कपड़े/भोजन व आवास दोनों की सुविधा प्राप्त हाती है। इसके विपरीत सर्वाधिक 52.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों का कहना है कि उनके मालिक कोई भी सुविधा नहीं देते है। तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ज्यादातर बाल श्रमिकों को मालिक द्वारा किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं दी जाती है, सिर्फ उनका शोषण किया जाता है।

तालिका.14: कार्योजन की प्रकृति क्या है

	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्वकालिक	279	69.8
आंि ाक	121	30.3
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका के देखने से पता चलता है कि सर्वाधिक 69.8 प्रतिशत बाल श्रमिक पूरे समय कार्य करते है। जबकि 30.3 प्रतिशत बाल श्रमिक केवल आंशिक समय के अनुसार कार्य करते है। तालिका में दर्शाये गये आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक बाल श्रमिक पूर्ण समय के समय परिश्रम करते है।

तालिका.15: क्या आपको छुट्टी के दिन का वेतन मिलता है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	32	8.0
नहीं	311	77.8
कभी–कभी	57	14.2
कुल	**400**	**100.0**

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 77.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों को छुट्टी के दिन का वेतन नहीं मिलता है। जबकि 14.2 प्रतिशत बाल श्रमिकों को कभी–कभी छुट्टी के दिन का वेतन मिलता है।8 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जिनको छुट्टी के दिन का वेतन मिलता है। तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि

अधिकतर बाल श्रमिकों को छुट्टी के दिन का वेतन नहीं मिलता है। जिससे उनके आर्थिक स्तर पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

तालिका.16: क्या मध्यावकाश मिलता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	273	68.2
नहीं	127	31.8
कुल	**400**	**100.0**

तालिका.17: यदि हाँ तो कितने समय के लिये मिलता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
15 मिनट	62	15.5
30 मिनट	106	26.5
45 मिनट	92	23.0
45 मिनट से अधिक	13	3.3
कुल	**273**	**68.2**

तालिका 4.16 में कुल 400 बाल श्रमिकों से पूछा गया कि क्या आपके मध्यावकाश मिलता है तो इनमें से सर्वाधिक 68.2 प्रतिशत बाल श्रमिकों को मध्यावकाश मिलता है जबकि 31.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों को किसी प्रकार को कोई मध्यावकाश नहीं मिलता है। तालिका 4.17 में मध्यावकाश मिलने वाले 68.2 प्रतिशत बाल श्रमिकों में से सर्वाधिक 26.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों को 30 मिनट का मध्यावकाश मिलता है। जबकि 15.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों को 15 मिनट, 23 प्रतिशत बाल श्रमिकों को 45 मिनट एवं 3.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों को 45 मिनट से अधिक का मध्यावकाश मिलता है। तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक बाल श्रमिकों को मिलने वाले मध्यावकाश से उनके कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होती है।

तालिका.18: घर से प्रतिश्ठान की दूरी कितनी है

	आवृत्ति	प्रतिशत
1 किमी	96	24.0
2 किमी	60	15.0
2 किमी से अधिक	149	37.3
निवास स्थान पर ही	95	23.8
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका के अनुसार सर्वाधिक 37.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों की प्रतिष्ठान से दूरी 2 किमी से अधिक है, जबकि 24 प्रतिशत बाल श्रमिकों की प्रतिष्ठान से दूरी 1 किमी एवं 15 प्रतिशत बाल श्रमिकों की प्रतिष्ठान से दूरी 2 किमी है। 23.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों अपने घर के पास में ही कार्यरत पाये गये।

तालिका.19: तुम जो काम करते हो उसकी प्रकृति क्या है

	आवृत्ति	प्रतिशत
स्थायी कार्य	294	73.5
अस्थायी कार्य	106	26.5
कुल	**400**	**100.0**

प्रस्तुत तालिका में कुल 400 बाल श्रमिकों से उनकी कार्य की प्रकृति के बारे में पूछा गया। इनमें से सर्वाधिक 73.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों का कार्य स्थायी पाया गया जबकि 26.5 प्रतिशत बाल श्रमिक अस्थायी कार्य करते है।

तालिका.20: क्या कार्य स्थल पर कोई सुरक्षा का इन्तजाम किया गया है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	94	24.0
नहीं	304	76.0
कुल	**400**	**100.0**

तालिका.21: यदि हाँ, तो कैसा इन्तजाम?

	आवृत्ति	प्रतिशत
केवल मास्क	6	1.5
केवल अग्निरोधक यंत्र	49	12.3
दोनों	35	8.8
अन्य कोई	6	1.5
कुल	**94**	**24.0**

उपरोक्त तालिका में कुल 400 बाल श्रमिकों से पूछा गया कि आपके कार्य स्थल पर कोई सुरक्षा का इन्तजाम किया गया है। तो इनमें से सर्वाधिक 76 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने कहा कि हमारे कार्य स्थल पर कोई सुरक्षा का इन्तजाम नहीं है जबकि 24 प्रतिशत बाल श्रमिकों के कार्य स्थल पर सुरक्षा का इन्तजाम किया गया है। कार्य स्थल पर सुरक्षा का इन्तजाम पाने वाले 24 प्रतिशत बाल श्रमिकों में से सर्वाधिक 12.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों के सुरक्षा उपकरणों में केवल अग्निरोधक यंत्र शामिल है जबकि 1.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों के सुरक्षा उपकरणों में केवल मास्क एवं 8.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों के सुरक्षा उपकरणों में अग्निरोधक यंत्र व मास्क दोनों उपलब्ध है। 1.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों ऐसे भी है जिनके कार्य स्थल पर अन्य कोई सुरक्षा का इंतजाम किया गया है।

तालिका.22: जिस क्षेत्र में तुम काम करते हो वो किसके अन्तर्गत आता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
संगठित क्षेत्र	244	61.0
असंगठित क्षेत्र	156	39.0
कुल	**400**	**100.0**

बाल श्रमिकों द्वारा संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों में काम करने के संदर्भ में उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 61 प्रतिशत बाल श्रमिक संगठित क्षेत्र में कार्य करते है जबकि 39 प्रतिशत बाल श्रमिक असंगठित

क्षेत्र में कार्य करते है। तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि संगठित क्षेत्र में काम करने से बाल श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार होता है।

तालिका.23: आप के कार्य स्थल पर प्राथमिक चिकित्सा सुविधा है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	77	19.3
नहीं	323	80.7
कुल	**400**	**100.0**

बाल श्रमिकों के कार्य स्थल पर प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा के संदर्भ में प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है किसर्वाधिक 80.7 प्रतिशत बाल श्रमिकों के कार्य स्थल पर कोई प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध नहीं है, जबकि 19.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों के कार्य स्थल पर प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध है।

तालिका.24: क्या आपके साथ मालिक द्वारा दुर्वव्यवहार किया जाता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	162	40.5
नहीं	142	35.5
कभी–कभी	96	24.0
कुल	**400**	**100.0**

मालिक द्वारा दुर्वव्यवहार करने के संदर्भ में उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 40.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों के साथ मालिक द्वारा दुर्वव्यवहार किया जाता है, जबकि 24 प्रतिशत बाल श्रमिकों के साथ मालिक द्वारा दुर्वव्यवहार कभी–कभी किया जाता है। 35.5 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जिनके साथ मालिक द्वारा दुर्वव्यवहार नहीं किया जाता है। तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मालिकों का व्यवहार सर्वाधिक बाल श्रमिकों के प्रति अच्छा नहीं रहा है। इनमें भाोशण की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

तालिका.25: कौन–कौन आपके मित्र है

	आवृत्ति	प्रतिशत
साथी बाल श्रमिक	227	56.8
पढ़ने वाले	69	17.2
निवास स्थान के आसपास के बच्चे	74	18.5
अन्य	30	7.5
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में कुल 400 बाल श्रमिकों से पूछा गया कि कौन–कौन आपके मित्र है तो इनमें से सर्वाधिक 56.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों का कहना है कि साथ में काम करने वाले व साथ रहने वाले हमारे मित्र है। जबकि 17.2 प्रतिशत बाल श्रमिकों के मित्र पढ़ने वाले बच्चे एवं 18.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों के मित्र उनके निवास स्थान के आसपास के बच्चे है। 7.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों के मित्र अन्य प्रकार के है।

3 आर्थिक स्तर

बाल मजदूरी तथा शोषण की निरंतर मौजूदगी से देश की अर्थव्यवस्था को खतरा होता है और इसके बच्चों पर गंभीर अल्पकालीन और दीर्घकालीन दुष्परिणाम होते हैं जैसे शिक्षा से वंचित हो जाना और उनका शारीरिक व मानसिक विकास ना होने देना।प्रस्तुत शोध में अधिकांश बालश्रमिक अपनी खराब आर्थिक स्थिति के कारण जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने के कारण काम पर जाते हैं लेकिन वे इन पारिवारिक जिम्मेदारियों को काम द्वारा पूरा कर पाते हैं या नहीं यह निम्न तालिकाओं द्वारा स्पष्ट किया गया है–

तालिका 26: आप मजदूरी क्यों करते है?

	आवृत्ति	**प्रतिशत**
आर्थिक तंगी	268	67.0
स्वयं के खर्च के लिए	100	25.0
शौक	23	5.8
अन्य	9	2.3
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में कुल 400 बाल श्रमिकों से मजदूरी करने का कारण पूछा गया। तो इनमें से सर्वाधिक 67 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने कहा कि आर्थिक तंगी के कारण मजदूरी करनी पड़ती है। जबकि 25 प्रतिशत बाल श्रमिक स्वयं के खर्च के लिये मजदूरी करते है। 5.8 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जो अपने शौक को पूरा करने के लिये मजदूरी करते है। शेष 2.3 प्रतिशत बाल श्रमिक अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिये मजदूरी करते है। तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक बाल श्रमिकों का मजदूरी करने का कारण आर्थिक तंगी है।

तालिका27: आपको कितना मासिक वेतन मिलता है?

	आवृत्ति	**प्रतिशत**
1000 रू. से कम	20	5.0
1000–1500 रू. तक	49	12.3
1500 से 2000 रू. तक	190	47.5
2000 रू. से अधिक	141	35.3
कुल	**400**	**100.0**

प्रस्तुत तालिका में बाल श्रमिकों को उनके द्वारा किये गये कार्यो के पारिश्रमिक को दर्शाया गया है। चयनित प्रतिदर्शो में से सर्वाधिक 47.5 प्रतिशत बाल श्रमिकोंने स्वीकार किया है कि उनको 1500 से 2000 रू. तक का मासिक वेतन मिलता है, इसके पश्चात् 35.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों को 2000 रू. से अधिक, 12.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों को 1000 से 1500 रू. तक एवं 5 प्रतिशत बाल श्रमिकों को 1000 रू. से कम वेतन मिलता हैं। तालिका को देखने से पता चलता है कि हमारे देश में बाल श्रमिकों का शोषण किस तरह हो रहा है। जो उन्हें कम मजदूरी पर कार्य को करना पड़ता है। तालिका से स्पष्ट होता है कि सस्ते श्रम के रूप में बालश्रमिकों की उपलब्धता के कारण उनका शोषण किया जाता है।

तालिका 28: मालिक द्वारा श्रम की समय–सीमा निर्धारित होने के बावजूद ओवरटाईम करवाया जाता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	153	38.3
नहीं	62	15.5
कभी–कभी	185	46.3
कुल	**400**	**100.0**

तालिका 29: यदि हाँ तो ओवरटाईम का अलग से भुगतान दिया जाता है

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	94	23.5
नहीं	59	14.8
कुल	**153**	**38.3**

उपरोक्त तालिका में सर्वाधिक 46.3 प्रतिशत बाल श्रमिक मालिक द्वारा श्रम की समय–सीमा निर्धारित होने के बावजूद कभी–कभी एवं 38.3 प्रतिशत से मालिक द्वारा ओवरटाईम करवाया जाता है, जबकि 15.5 प्रतिशत बाल श्रमिक से ओवरटाईम नहीं करवाया जाता है।

अगर ओवरटाईम करवाया जाता है तो ओवरटाईम का अलग से भुगतान दिया जाता है। इसके बारे में 23.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने कहा कि उनको ओवरटाईम का अलग से भुगतान दिया जाता है। जबकि 14.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों को ओवरटाईम का अलग से भुगतान नहीं दिया जाता है।

तालिका 30: आमदनी किस तरह से प्राप्त होती है

	आवृत्ति	प्रतिशत
प्रतिदिन	115	28.7
साप्ताहिक	196	49.0
मासिक	89	22.3
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में बाल श्रमिकों द्वारा किये गये पारिश्रमिक से प्राप्त आमदनी को प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 49 प्रतिशत बाल श्रमिकों को उनके कार्य का भुगतान प्रति सप्ताह किया जाता है। जबकि 28.7 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने बताया कि उन्हें आवश्यकतानुसार प्रतिदिन पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है। वही 22.3 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जिनको मासिक भुगतान किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब उन्हें आवश्यकता होती है तो उनके मालिक उनकी आमदनी का रूपया उन्हें दे देते है।

तालिका31: क्या आपके परिवार के ऊपर कर्ज है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
नहीं है	83	20.8
थोड़ा बहुत कर्ज है	182	45.5
बहुत ज्यादा कर्ज है	79	19.8
पता नहीं	56	14.0
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका कुल 400 बाल श्रमिकों के परिवार पर कर्ज को दर्शाता है। सर्वाधिक 45.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने स्वीकार किया है कि उनके परिवार पर थोड़ा बहुत कर्ज है जबकि 19.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों का कहना है कि उनके परिवार पर बहुत ज्यादा कर्ज होने के कारण उनको मजदूरी करने पर विवश करती है। इस कारण से उनको बहुत ही छोटी उम्र से ही मजदूरी करनी पड़ती है। इसके अलावा 20.8 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जिनके परिवार पर कोई कर्ज नहीं है एवं 14 प्रतिशत बाल श्रमिकों को पारिवारिक कर्ज के बारे में कुछ भी नहीं पता है।

तालिका 32: आपके वेतन से आपके परिवार को भरण पोषण में कितना योगदान होता है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्ण	127	31.8
आंशिक	192	48.0
कुछ नहीं	81	20.3
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका कुल 400 बाल श्रमिकों से पूछा गया कि आपके वेतन से आपके परिवार को भरण पोषण में कितना योगदान होता है तो इनमें से सर्वाधिक 48 प्रतिशत बाल श्रमिकों का कहना है कि उनका पारिश्रमिक परिवार में भरण–पोषण के लिये आंशिक रूप से योगदान देता है। जबकि 31.8 प्रतिशत ने माना कि उनका पारिश्रमिक परिवार के भरण पोषण के लिए पूर्ण रूप से योगदान देता है। इसके विपरीत 20.3 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जिनका पारिश्रमिक उनके परिवार के भरण–पोषण के लिये कुछ भी योगदान नहीं देता है।

तालिका33: क्या आपको काम के अनुरूप वेतन मिलता है, जिससे आप संतुष्ट है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	122	30.5
नहीं	175	43.8
आंशिक	103	25.8
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका को देखने से पता चलता है कि 30.5 प्रतिशत बाल श्रमिकों को मिलने वाले पारिश्रमिक से संतुष्ट है। जबकि सर्वाधिक 43.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों को काम के अनुरूप वेतन नहीं मिलता है क्योंकि उनकों लगता है कि जितना परिश्रम किया है उतना वेतना नहीं मिल पाता है। इसी के साथ 25.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने काम के अनुरूप मिलने वाले वेतन की आंशिक रूप संतुष्टि प्रकट की।यहाँ पर तालिका के विश्लेषण से श्रमिकों के शोषण की प्रवृत्ति उजागर हो रही है जो कि पारिश्रमिक भुगतान को लेकर है।

तालिका 34: क्या आपसे वयस्क मजदूरों जितना काम करवाया जाता है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	269	67.2
नहीं	131	32.8
कुल	**400**	**100.0**

बाल श्रमिकों से वयस्क मजदूरों जितना काम करवाने के संदर्भ में उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 67.2 प्रतिशत बाल श्रमिकों से वयस्क मजदूरों जितना काम करवाया जाता है, जबकि 32.8 प्रतिशत बाल श्रमिकों से वयस्क मजदूरों जितना काम नहीं करवाया जाता है। तालिका को विश्लेषण करने से पता चलता है कि बाल श्रमिकों से वयस्क मजदूरों जितना काम करवाना उनका शोषण करना है जो कि संविधान के विरूद्ध है।

तालिका 35: क्या आपको वयस्क मजदूरों के आधे से भी कम मजदूरी दी जाती है? इस बात से सहमत है।

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	163	40.8
नहीं	135	33.8
आंशिक	102	25.5
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में कुल 400 बाल श्रमिकों से पूछा गया कि क्या आपकों वयस्क मजदूरों के आधे से भी कम मजदूरी दी जाती है, तो इनमें से 40.8 प्रतिशत बाल श्रमिक सहमत हुये, वहीं 33.8 प्रतिशत बाल श्रमिक इस कथन से सहमत नहीं है। 25.5 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जो आंशिक रूप से इस बात से सहमत है कि उनकों वयस्क मजदूरों के आधे से भी कम मजदूरी दी जाती है।

तालिका 36: क्या आपको जो मजदूरी मिलती है उसमें से स्वयं के लिए भी रखते है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	353	88.3
नहीं	47	11.8
कुल	**400**	**100.0**

तलिका 37: यदि हाँ, तो किस मद में खर्च करने के लिए?

	आवृत्ति	प्रतिशत
कपड़े के लिए	111	27.8
चाय नाशता	52	13.0
गुटखा पान मसाला	55	13.8
इत्यादि	135	33.8
कुल	**400**	**100.0**

सर्वाधिक 88.3 प्रतिशत बाल श्रमिकों मानते है कि उनको जो मजदूरी मिलती है उसमें से स्वयं के लिये भी रखते है, जबकि 11.8 प्रतिशत बाल श्रमिक अपने द्वारा कमायी गयी मजदूरी को स्वयं के लिये नहीं रखते है।

तालिका का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि जो 88.3 प्रतिशत बाल श्रमिक स्वयं द्वारा कमाये गये पारिश्रमिक अपने पास रखते है इस मजदूरी का उपयोग 27.8 प्रतिशत बाल श्रमिका कपड़ो पर, 13 प्रतिशत चाय नाश्ता पर, 13.8 प्रतिशत गुटखा पान मसाला पर एवं 33.8 प्रतिशत अन्य वस्तुओं को खरीदने के लिये खर्च करते है। तालिका से स्पष्ट होता है कि बालश्रमिक कम उम्र में तम्बाकू जैसे व्यसनों का शिकार हो जाते है।

तालिका 38: क्या आपका मालिक आपको आवश्यकता पड़ने पर एडवांस पैसा भी देते है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	188	47.0
नहीं	108	27.0
कभी–कभी	104	26.0
कुल	**400**	**100.0**

उपरोक्त तालिका में सर्वाधिक 47 प्रतिशत बाल श्रमिकों को आवश्यकता पड़ने पर मालिक द्वारा एडवांस दिया जाता है जबकि 26 प्रतिश्त बाल श्रमिकों को कभी–कभी एडवांस दिया जाता है। 27 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जिनको बिल्कुल भी एडवांस नहीं दिया जाता है।

तालिका 39: क्यो आपको त्योहार/उत्सव पर अतिरिक्त पैसे मिलते है?

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	100	25.0
नहीं	99	24.8
कुछ खास त्योहार पर	201	50.2
कुल	**400**	**100.0**

प्रस्तुत तालिका में बाल श्रमिकों को किसी त्योहार या उत्सव पर अतिरिक्त पैसे मिलने के संदर्भ में दर्शाया गया है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 50.2 प्रतिशत बाल श्रमिकों कुछ खास त्योहार पर ही अतिरिक्त पैसे दिये जाते है। जबकि 25 प्रतिशत बाल श्रमिकों सभी त्योहार/उत्सव पर अतिरिक्त पैसे दिये जाते है। परन्तु 24.8 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे भी है जिनको त्योहार/उत्सव पर कोई अतिरिक्त पैसे नहीं दिये जाते है।

***सह आचार्य**
राजनीति विज्ञान विभाग
एस.पी.एन.के.एस राजकीय महाविद्यालय
दौसा (राज.)